कक्षा-9 **विषय- हिंदी**

पाठ 4. माटी वाली

लेखक - विद्यासागर नौटियाल

सारांश

माटी वाली शीर्षक के द्वारा लेखक विद्यासागर नौटियाल ने उत्तराखंड के टिहरी बांध के कारण विस्थापित हुए सैकड़ों गांवों के लोगों के दर्द को यहां पर दुनिया के सामने लाने का प्रयास किया है।विस्थापन की वजह से किस प्रकार की समस्याओं का सामना आम लोगों को करना पड़ता है आधुनिकता के नाम पर बड़े-बड़े बांधों को बनाने की वजह से किस प्रकार से छोटी मजदूर और गरीब लोगों की रोजी-रोटी छिन जाती है इस बात को लेखक ने इस पाठ के अंदर दर्शाया है।

पाठ में छोटे कद की गरीब हरिजन बुढ़िया जो पूरे टिहरी शहर में घर-घर जाकर के लाल माटी की आपूर्ति करती है वह रोज शहर से बाहर छोटे से गांव में दूर एक झोपड़ी में अपने पति के साथ रहती है वहां से वह रोज सुबह निकल कर के मिट्टी खोदने चली जाती है वहां से मिट्टी लाकर के वह टिहरी शहर के घर घर में बांटती है तेरी के लोगों को केवल वही यह कैसी औरत है जो मिट्टी की आपूर्ति करती है और उसके बिना लोगों का काम नहीं चलता है। भोजन पकाने के बाद चूल्हे चौके के लिपाई पुताई के लिए या फिर किसी त्योहार के समय घर की लुगाई पुताई करने के लिए लाल मिट्टी के बहुत अधिक आवश्यकता होती है पूरे शहर में उस बुढ़िया का कोई प्रतिद्वंदी नहीं था वही एक अकेली मात्र औरत थी जो माटी बेच दी थी वह हरिजन गुड़िया बहुत ही अधिक गरीब थी।

माटी देने के बदले में उसको किसी घर से पैसे मिलते तो किसी घर से रोटी सब्जी और साग मिल जाता था उसे ही ले करके वह अपना रोजी-रोटी कमाते थी और अपना गुजर-बसर करते थे टिहरी बांध बनने के कारण और उसके पश्चात उनको किस प्रकार के समस्याओं का सामना करना पड़ा इस बात को लेखक ने बहुत ही बहुत ही मार्मिक तरीके से उकेरा है।वह शहर भर से मिली रोटियों को अपने पति के लिए अपने पल्लू में बात करके लेकर जाती है उनके पास सब्जी खरीदने के पैसे भी नहीं होते उसके घर में तेल भी नहीं होता है ना कि होता है ना उसके पास जमीन है मैं जायदाद है उसकी झोपड़ी भी शहर के एक ठाकुर के जमीन के ऊपर खड़ी है जो के बदले में उसे ठाकुर की अनेकों प्रकार से बेगार निकालनी पड़ती है।

पूरे शहर के लोग बुरी माटी वाली को जानते हैं ना केवल उसे बल्कि उसके कनस्तर को भी बहुत अच्छी तरह से पहचानते हैं वह भी तेरी का ऐसा कोई घर या व्यक्ति नहीं है जिसे ना पहचानती हो।

अभी जिस घर में उसने माटी पहुंचाई है उस घर की मालकिन ने उसे चाय के साथ दो रोटी आदि है एक रोटी उसने अपने पति के लिए अपने पल्लू में बांध ली तो एक रोटी उसने किसी को ना देखते हुए चबाने का अभिनय करते हुए खाने लगी साथ ही साथ चाय निकलते फूंक मारते सुख-दुख छोड़ करके चाय पीने लगती है। के पास अपने भाग्य के बारे में सोचने का जरा भी वक्त नहीं है।वह मालकिन से कहती है ठकुराइन तुमने अभी तक पीतल की गिलास संभाल कर के रखी है पूरे शहर में तो क्या किसी दुकान में भी इस प्रकार के पुराने बर्तन अब कहीं नहीं मिलते हैं अब तो हर ग्राम में स्टील के चीनी मिट्टी के या फिर काट के ही बांधी और बर्तन मिलते हैं। ठकुराइन कहती है - अब तांबे पीतल और कांसे के बर्तन बहुत ही मुश्किल से घरों में मिलते हैं क्योंकि यह हमारे बुजुर्गों के खरीदे हुए बर्तन हैं और मैं इन्हें हराम के दाम में कभी भी बेचना नहीं चाहती हूं । हालांकि इसको खरीदने वाले कई लोग हमारे घर के चक्कर काट चुके हैं।

अपने पति के लिए दो रोटियां ले जाकर के रास्ते पर बुढ़िया यह सोचती हुई जा रही थी कि आज वह अपने पति को कोरी रोटीयाँ नहीं देगी । माटी बेचने से उसे जो पैसे मिले थे उससे उसने एक पाव प्याज खरीदे थे । वह घर जाकर के प्याज की सब्जी बनाएगी और सब्जी के साथ दो रोटियां उसे दे देगी। अब वह इतना बुड्ढा और बीमार हो चुका है कि दो रोटियां भी नहीं खाता है। जो बचेगी उसे वह खा लेगी और एक तो वह पहले ही खा चुकी थी । मगर जैसे ही वह घर पहुंची तो आज उसका बूढ़ा उसे देख कर चौका नही । उससे रोटियां मांगी नहीं और ना ही उसे उत्साह से देख॥ उसने जा कर के अपने बूढ़े को छुआ तो पता चला कि वह तो अपनी माटी को छोड़कर के जा चुका था। आज वह उससे किसी भी प्रकार की रोटियां नहीं मांगेगा।

अत्यधिक बारिश के कारण टिहरी बांध की दो सुरंगों से पानी छोड़ दिया गया था । उस पानी ने सारे कुल के श्मशानों को घेर लिया था। सारे शमशान पानी से भर चुके थे बुढ़िया अपनी झोपड़ी के बाहर बैठी थी और आने जाने वाले लोगों से कह रही थी कि कुछ भी हो जाए भैया किसी गरीब का श्मशान नहीं उजड़ना चाहिए।क्योंकि उस गरीब का तो कुछ था नहीं श्मशान में पानी भरने से वह अपने पति की चिता को अग्नि भी नहीं दे पा रही थी।

टिहरी बांध पुनर्वास अधिकारी ने जब उससे पूछा कि तुम्हारे पास क्या है अगर तुम्हारे पास किसी जमीन का कागज हो तो लाओ हम तुम्हारे पुनर्वास की व्यवस्था कर देते हैं बुढ़िया ने कहा मेरे पास तो अपना कहने के लिए कुछ नहीं किया मैं तो माता खाना से माटी ला करके अपनी रोजी-रोटी कमाती थी ।अफसर ने कहा अगर उसके नाम का कोई कागज है तो लेकर आ जाओ ।बुढ़िया ने कहा मेरे नाम कहां है ? वह तो मेरी रोजी है अब मैं कहां जाऊंगी और अपनी रोजी-रोटी का इंतजाम कैसे करूंगी ? अफसर ने कहा यह समस्या हमारी नहीं है यह तो तुम्हें स्वयं ही सोचना होगा।